31 $\frac{3}{4}$

पत्रावली पेश। उभय पक्षकारान उपस्थित। प्रार्थी स्वयं भी उपस्थित। प्रार्थी ने एक प्रार्थना पत्र इस आशय का पेश किया किया कि वे प्रार्थना पत्र को आगे नहीं चलाना चाहते एवं इसी स्टेज पर विड्रा करना चाहते है। अत: आज की पेशी में लेकर पत्रावली का निस्तारण किया जावे। प्रार्थी के प्रार्थना पत्र को स्वीकार कर प्रार्थना पत्र इसी स्टेज पर विड्रा (खारीज) किया जाता है। पत्रावली फैसला शुमार हो नम्बर से कम हो। पत्रावली तरतीब वनाकर दाखिल दफ्तर हो।